❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को आर्यजगत की ओर से
197वें महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव एवं ऋषि बोधोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 44, अंक 14 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 22 फरवरी, 2021 से रविवार 28 फरवरी, 2021
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

ओ३म्

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के तत्त्वावधान में
महर्षि दयानन्द सरस्वती
197 वें
जन्मोत्सव
पर

फाल्गुन कृष्ण 10 (दयानन्द दशमी) 2077 विक्रमी तद्नुसार सोमवार 8 मार्च, 2021

यज्ञ-प्रवचन, भजन संध्या एवं भव्य जन्मदिवस समारोह

रविवार 7 मार्च, 2021	रविवार 7 मार्च, 2021	रविवार 7 मार्च, 2021	सोमवार 8 मार्च, 2021
महर्षि दयानन्द गौसम्वर्धन केन्द्र गाजीपुर, दिल्ली (निकट आनन्द विहार बस अड्डा)	आर्यसमाज कीर्ति नगर एस. डी. पब्लिक स्कूल, रामा रोड, दिल्ली-15	आर्यसमाज प्रशान्त विहार सैक्टर-14, दिल्ली-110085	आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी नई दिल्ली-110065
सायं 3:00 से 5:30 बजे	सायं 3:00 से 5:30 बजे	सायं 3:00 से 5:30 बजे	सायं 3:00 से 5:30 बजे

जन्मोत्सव कार्यक्रमों का होगा लाइव प्रसारण
आर्य संदेश टीवी
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

समस्त आर्यसमाजों एवं आर्यजन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की शिक्षाओं, सिद्धान्तों एवं आर्य समाज की मान्यताओं को जनमानस तक पहुंचाने में सहयोगी बनकर संगठन शक्ति का परिचय दें।

कृपया ध्यान दें : सरकार द्वारा जारी कोरोना बचाव दिशा-निर्देशों के कारण प्रवेश सीमित हैं। कृपया मास्क, सैनिटाजर एवं सामाजिक दूरी का विशेष ध्यान रखें।

धर्मपाल आर्य	ओम प्रकाश आर्य	शिव कुमार मदान	मृदुला चौहान	अरुण प्रकाश वर्मा	विनय आर्य	सुखबीर सिंह आर्य	शिवशंकर गुप्ता	सुरेन्द्र आर्य	सुरेशचन्द्र गुप्ता	कृपाल सिंह	विद्यामित्र ठुकराल
प्रधान	उप प्रधान	उप प्रधान	उप प्रधान	उप प्रधान	महामन्त्री	मन्त्री	मन्त्री	मन्त्री	मन्त्री	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं की ओर से
महर्षि दयानन्द बोधोत्सव एवं शिवरात्रि के पावन अवसर पर

विशाल ऋषि मेला

फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी सम्वत् 2077 विक्रमी तद्नुसार बृहस्पतिवार, 11 मार्च, 2021
स्थान : रघुमल आर्य कन्या सी.सै. स्कूल, राजा बाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-1

यज्ञ : सायं 3 बजे
सार्वजनिक सभा : सायं 3:30 बजे से 5:30 बजे तक
मधुर भजन एवं संगीत
बच्चों द्वारा आकर्षक प्रस्तुतियां
सार्वजनिक सभा

इस कार्यक्रम का लाइव प्रसारण केवल आर्य संदेश टीवी पर देखें
www.AryaSandeshTV.com

निवेदक
आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य (पंजी०)
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

कृपया ध्यान दें : सरकार द्वारा जारी कोरोना बचाव दिशा-निर्देशों के कारण प्रवेश सीमित हैं। कृपया मास्क, सैनिटाजर एवं सामाजिक दूरी का विशेष ध्यान रखें।

197वां महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव उत्साह पूर्वक मनाएं आर्यसमाज व आर्य संस्थाएं

राष्ट्र एवं मानव सेवा को समर्पित आर्य समाज के संस्थापक, प्रेम और करुणा की प्रतिमूर्ति महर्षि देव दयानंद सरस्वती का जन्मदिवस मानव मात्र के लिए कल्याणकारी प्रेरणाओं का महोत्सव है। ऋषि-मुनियों की भूमि भारत में महर्षि देव दयानंद का स्थान हिमालय के समान ऊंचा और विशाल है। 197 वर्ष पूर्व 12 फरवरी 1824 को गुजरात प्रांत के टंकारा में जन्में ऋषि देव दयानंद संपूर्ण भारत और विश्व के लिए पूजनीय और अनुकरणीय हैं। यूं तो सभी लोग अपने स्वजनों का जन्मदिन अपने घर, परिवार और रिश्ते-नातों के बीच मनाते हैं। इससे आगे अगर कोई थोड़ा सा ज्यादा लोकप्रिय हो तो क्षेत्र, नगर, प्रांत और राष्ट्रीय स्तर पर जन्मदिन मनाया जाता है। लेकिन जिन्होंने सोता देश जगाया, वेदों का पाठ पढ़ाया, सत्य का मार्ग दिखाया, नारी उद्धार कराया, सती प्रथा, बाल विवाह जैसी कुरीतियों से समाज को बचाया, स्वयं का स्वयं से परिचय करवाया, मानव जीवन का लक्ष्य और उद्देश्य बताया, ढोंग, पाखंड से पीड़ित मानव मात्र को सच्चिदानंद स्वरूप परमात्मा की सच्ची उपासना का सुपथ दिखाया, ऐसे ऋषिवर देव दयानंद जो संपूर्ण विश्व में एक महान समाज सुधारक के रूप में विख्यात हैं, उनका जन्मदिन समस्त आर्यजनों, आर्य परिवारों, आर्य समाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं तथा अन्य अनेक आर्य संस्थाओं, प्रतिष्ठानों की संपूर्ण उपयोगिताओं और उपलब्धियों का सबसे बड़ा महोत्सव है। इससे आगे यह पूरे भारत देश और विश्व के लिए हर्षोत्सव है।

- शेष पृष्ठ 7 पर

देववाणी - संस्कृत | वेद-स्वाध्याय

अन्दर देखो !

यो मर्त्येष्वमृत ऋतावा देवो देवेष्वरतिर्निधायि।
होता यजिष्ठो मह्ना शुचध्यै हव्यैरग्निर्मनुष ईरयध्यै।। –ऋक्. 4/2/1
ऋषि: **वामदेवः**।। देवता – **अग्निः**।। छन्द: **पङ्क्ति**ः।।

शब्दार्थ – **यः** = जो **मर्त्येषु** = मरणशील मनुष्यों में **अमृतः** = कभी न मरनेवाला **ऋतावा** = सत्यरूप होकर और **देवेषु** = इन्द्रियादि देवों के बीच में **अरतिः देवः** = उनमें असंगरूप से गया हुआ एक देव होकर **निधायि** = निहित है, वह **होता** = दान-आदान करनेवाला **यजिष्ठः** = सर्वश्रेष्ठ यजनीय **अग्निः** = आत्माग्नि हममें **मह्ना**: = अपनी महिमा द्वारा **शुचध्यै** = प्रदीप्त होने के लिए ही (निहित है) और **मनुषः** = मनुष्य को **हव्यैः** = आत्म-हवनों से (यजन की) **ईरयध्यै** = प्रेरणा करने के लिए ही निहित है।

विनय – यह आत्माग्नि हममें किसलिए रक्खा हुआ है? मिट्टी हो जाने वाले हम मर्त्यों में यह कभी न मरनेवाला अमृततत्त्व, सच्चा, सत्यरूप, 'आत्मा' कहलानेवाला एक तत्त्व निहित है, इन इन्द्रिय आदि देवों के बीच में जो यह एक देव, इन सब देवों में असङ्ग रूप से गया हुआ एक अमर देव रक्खा हुआ है, यह किस प्रयोजन के लिए है? निःसन्देह यह इसीलिए है कि यह इसमें बढ़े, प्रदीप्त हो, अपनी महिमा द्वारा विविध प्रकार से प्रदीप्त हो। यह जीवन इसीलिए है कि इस द्वारा आत्मा अपने-आपको विकसित कर सके। यह संसार इसीलिए है कि इसमें आत्माग्नि अपना अधिक-से- अधिक प्रकाश कर सके, अपनी महान् महिमा द्वारा, अद्भुत सामर्थ्य द्वारा, अपने दिव्य ऐश्वर्यों द्वारा अपने-आपको अधिक -से -अधिक प्रकाशित कर सके। इसीलिए यह आत्मा 'होता' बना है, दान-आदान करनेवाला हुआ है। आत्मा के लिए हम जो कुछ बलिदान करते हैं, उससे हजारों गुणा आदान उसके विविध ऐश्वर्यों के रूप में हमें प्राप्त होता है। इसलिए यह आत्मा ही यजिष्ठ, सर्वश्रेष्ठ यजनीय है। इसका ही यजन करके हमें आत्मिक सामर्थ्यों और आत्मिक ऐश्वर्यों में अपने को प्रदीप्त करना चाहिए, किन्तु आत्मा से यह अद्भुत सामर्थ्यों, दिव्य ऐश्वर्यो का आदान तभी हो सकता है जब हम आत्मा के लिए दान, आत्म-बलिदान करते रहें। ओ! यह दिव्य अग्नि तो मनुष्य को आत्मबलिदान के लिए निरन्तर प्रेरित भी कर रहा है। बाह्य अग्निहोत्र का अग्नि यदि हमें कुछ प्रिय लगता है, यदि इसके प्रति हमें कुछ आकर्षण होता है, तो इससे सहस्त्रों गुणा प्रिय और आकर्षक यह अपना अन्दर का आत्माग्नि है। यह प्यारा आत्मा जब दीख जाता है तब तो मनुष्य पृथिवी-भर को स्वाहा करके भी इसके प्रेम को पाना चाहता है। इसकी ज्योति इतनी प्यारी है कि उसके दर्शनमात्र से मनुष्य शेष सब अनात्म संसार को एकदम बलिदान कर देने के लिए उत्कंठित हो जाता है। इसलिए भाइयो! तनिक देखो! अन्दर देखो! तुममें प्रदीप्त होने की ही प्रतीक्षा में यह तुम्हारा आत्माग्नि निहित है। क्या तुम इसे प्रदीप्त नहीं करोगे? यह अमृत तुम्हें निरन्तर बलिदान (यजन) के लिए प्रेरित कर रहा है, क्या तुम उसकी बात नहीं सुनोगे?

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय | खेल भावना के विपरीत गहरी साजिश

अब क्रिकेट का भी मजहबवाद

......विजय हजारे ट्रॉफी के लिए हमने सोमवार को टीम घोषित की और चंदेला को कप्तान बनाया तो अगले ही दिन जाफर ने इस्तीफा भेज दिया। मामला इतना ही नहीं इससे आगे जाफर ने हद ही कर दी, महिम ने कहा कि टीम का सहयोगी स्टाफ बताता था कि वह कैंप के दौरान मौलवी बुलाते थे। मुश्ताक अली ट्रॉफी के दौरान टीम के मैनेजर रहे नवनीत मिश्रा ने यहाँ तक कहा कि कैंप के दौरान आयोजन स्थल पर तीन मौलवी आए थे। जब नवनीत मिश्रा ने इसका कारण पूछा तो जाफर ने नवनीत मिश्रा से कहा था कि वे तीनों उन्हें जुम्मे की नमाज अदा कराने आए हैं। जबकि कैंप के दौरान दो बार ऐसा हुआ। यहीं नहीं उत्तराखंड टीम पिछले साल से ही 'राम भक्त हनुमान की जय' स्लोगन का इस्तेमाल कर रही थी। लेकिन इससे जाफर के मजहब को खतरा हो गया और मैदान पर मौलवी बुलाने वाले जाफर ने इसे भी बदलवा दिया।.....

शक मुस्लिम लेखक गुस्ताख मंटो ने कहा है कि इस दुनिया में जितनी भी लानतें हैं और पाखंड उन सब की अम्मा है, आज का मुसलमान। ये अपने आप में हिप्पोक्रेसी की एक आला मिसाल है। इनके माथों पर जो सजदे के निशान हैं वो इसकी अकीदत यानि श्रद्धा आस्था की तरह बनावटी हैं। ये हराम की कमाई जेब में भर हलाल गोश्त की दुहाई दिया करता है। ये शब्द पढने में थोड़े विचलित कर सकते हैं लेकिन पिछले दिनों उत्तराखंड में जो हुआ वह भी कम विचलित करने वाला नही है।

श्रीलंका में कुछ समय पहले पाकिस्तानी क्रिकेटर अहमद शहजाद ने वनडे मैच खत्म होने के बाद श्रीलंका के क्रिकेटर दिलशान तिलकरत्ने को धर्म परिवर्तन करने, इस्लाम अपनाने की सलाह दी थी। तब यह मामला विश्व स्तर पर बड़ा गूंजा था, लोगों ने पूछा था पाकिस्तान की क्रिकेट टीम के दिमाग में क्रिकेट है या इस्लाम? अब ऐसा ही मामला भारत में सुर्खियाँ बना है। यहाँ भी एक क्रिकेट कोच के दिमाग में क्रिकेट नहीं, ऐसा ही कुछ निकलना बताया जा रहा है। दरअसल भारतीय क्रिकेटर वसीम जाफर का नाम सबने सुना होगा। सन्यास लेने के बाद जाफर साहब को उत्तराखंड क्रिकेट संघ का कोच बनाया था। इसके लिए जाफर को एक सत्र के लिए 45 लाख रुपये की भारी-भरकम राशि भी दी गयी। अब जाफर ने उत्तराखंड क्रिकेट संघ के सचिव महिम वर्मा पर तमाम आरोप लगाकर मुख्य कोच के पद से इस्तीफा दे दिया। लेकिन जब सामने आकर महिम वर्मा ने पूरा किस्सा सुनाया तो क्रिकेट की धर्मनिरपेक्ष छवि को खराब करने के उनके मनसूबे पर सवाल उठ गये।

पूर्व बीसीसीआई उपाध्यक्ष महिम ने आरोप लगाया कि जाफर उत्तराखंड क्रिकेट संघ के अधिकारियों से लड़ने के अलावा मजहबी गतिविधियों से टीम को तोड़ने का प्रयास कर रहे थे। वह गेस्ट प्लेयर के तौर पर इकबाल अब्दुल्ला, समद सल्ला, जय बिस्टा को लेकर आए। जाफर ने कुणाल चंदेला की जगह जबरदस्ती इकबाल को कप्तान बनाया। शुरुआत में हमने उनके सारे फैसलों को माना लेकिन टीम मुश्ताक अली ट्रॉफी के पांच में से चार मैच हार गई।

विजय हजारे ट्रॉफी के लिए हमने सोमवार को टीम घोषित की और चंदेला को कप्तान बनाया तो अगले ही दिन जाफर ने इस्तीफा भेज दिया। मामला इतना ही नहीं इससे आगे जाफर ने हद ही कर दी महिम ने कहा कि टीम का सहयोगी स्टाफ बताता था कि वह कैंप के दौरान मौलवी बुलाते थे। मुश्ताक अली ट्रॉफी के दौरान टीम के मैनेजर रहे नवनीत मिश्रा ने यहाँ तक कहा कि कैंप के दौरान आयोजन स्थल पर तीन मौलवी आए थे। जब नवनीत मिश्रा ने इसका कारण पूछा तो जाफर ने नवनीत मिश्रा से कहा था कि वे तीनों उन्हें जुम्मे की नमाज अदा कराने आए हैं। जबकि कैंप के दौरान दो बार ऐसा हुआ। यही नहीं उत्तराखंड टीम पिछले साल से ही 'राम भक्त हनुमान की जय' स्लोगन का इस्तेमाल कर रही थी। लेकिन इससे जाफर के मजहब को खतरा हो गया और मैदान पर मौलवी बुलाने वाले जाफर ने इसे भी बदलवा दिया।

जाफर ने तर्क दिया कि इस टीम में सभी धर्म के लोग हैं इसलिए इस स्लोगन को बदल लेना चाहिए, जब उनसे कहा गया कि इसकी जगह 'उत्तराखंड की जय' कर लेते हैं तो जाफर का मजहब जय से भी खतरें में आ गया और जाफर के कहने पर बाद में 'गो उत्तराखंड टीम' का स्लोगन किया गया। यानि उत्तराखंड की जय का नारा साम्प्रदायिक स्लोगन था और गो उत्तराखंड धर्मनिरपेक्ष हो गया। यही नहीं मजहबी सनक दिमाग में इस तरह सवार हुई कि जैसा कि महिम वर्मा बता रहे हैं कि वह इकबाल को आगे बढ़ाने के चक्कर में ओपनर चंदेला को नीचे बल्लेबाजी कराने लगे। जब जाफर का विरोध होने लगा उसकी मजहबी सनक सबके सामने आने लगी और कोई जवाब नहीं देते बना तो ये कहकर इस्तीफा दे दिया कि मुख्य कोच के तौर पर ऐसी परिस्थिति में वे काम नहीं कर सकते हैं।

अब पता नहीं जाफर साहब को कैसी परिस्थिति चाहिए थी, हो सकता है कुछ ऐसी कि टीम के सभी खिलाडी नमाज पढ़ें, रोजे रखें, मैदान पर अजान हो, महिला दर्शक बुरका पहन के बैठे, चीयरलीडर्स हिजाब में ठुमके लगाये और बाकि के खिलाडी भी उनकी तरह दाढ़ी रखें, सब खिलाडियों के नाम अरबी भाषा के हों?

हो सकता है इसी कारण शायद गुस्ताख मंटो कहता है कि इस हिप्पोक्रेसी के चलते, कई बरस पहले इन मजहब के मुहाफिजों ने इस्लाम को एक हसीन महबूबा बना दिया था, इक ऐसी महबूबा जिसकी पाकीजगी की दुहाइयां देकर, ये कागज के मजहब परस्त अपनी नापाकियों को अंजाम दिया करते हैं।

गुस्ताख मंटो कहता है आज के मुसलमान के ख्वाब में या तो बाबरी की दीवारों पर हथौड़ा चलाते भगवा दहशतगर्द होते हैं या फिर तीन तलाक, हिजाब और टखनों से ऊपर पैजामे। ये अपनी मुफलिसी और मुश्किल हालात को बेहतर करने के बजाए इस गम में मुब्तला हैं कि किसी सलमान रुश्दी ने कोई किताब लिखी है जिससे इस्लाम खतरे में आ गया है।मंटो यही नहीं रुकता, आगे लिखता है इस कौम को अपने जाति मामले हल करने में कोई दिलचस्पी नहीं, ये मजहब की गिरफ्त में जकड़ी हुई शरिया के तारों से बंधी हुई कौम है,

- शेष पृष्ठ 3 पर

पंजाब के किसानों के लिए जागृति का सन्देश

विकास के चक्कर में फंसकर विनाश की राह पर बढ़ती पंजाब की खेती

...एक अध्ययन के अनुसार पंजाब का 80 प्रतिशत पानी मनुष्यों के पीने लायक नहीं रहा है। 2001-09 के बीच अकेले मुक्तसर जिले में 1074 व्यक्तियों की कैंसर से मृत्यु हुई है और 668 गंभीर अवस्था में हैं। मालवा क्षेत्र में कैंसर अस्पताल नहीं होने से लोग बीकानेर इलाज के लिए जाते हैं। फोरेंसिक लैब पटियाला ने 12 जिलों के खून के सैम्पल लिए जिनमें 6 से 13 प्रतिशत पेस्टिसाइड खून में मिला है। डॉ. अम्बेडकर नेशनल इंस्टीट्यूट जालंधर ने 34 गाँवों के पानी के हैंडपम्पों में यूरेनियम पाया है जिनमें मांसा जिले की स्थिति गंभीर है। भटिंडा जिले में यूरेनियम की सान्द्रता 30 माइक्रोग्राम प्रति लीटर पाई गई जबकि यह 9 से अधिक नहीं होना चाहिए। पंजाब सरकार इन गंभीर क्षेत्रों में 200 आर.ओ. रिवर्स सिस्टम लगा रही है परन्तु वैज्ञानिकों के अनुसार आर.ओ. सिस्टम से हेवीमेटल्स जैसे आर्सेनिक, क्रोमियम, लोहा आदि को दूर नहीं किया जा सकता है। ग्रीनपीस ने भटिंडा, फरीदकोट, मांसा, संगरूर, मुक्तसर और मोगा जिलों में स्थिति गम्भीर पाई गई है। भैंस का दूध भी प्रदूषित हो गया है। 2500 लोगों की मृत्यु के बाद बिसरा की जांच की गई जिसमें डी.डी.टी. ईंधन और इंडोसल्फान रसायन मिले हैं। 10 वर्ष से कम और 10-35 वर्ष के बच्चों में कैंसर पाया गया।....

पुण्यमय भारत देश में पंजाब राज्य का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। एक तरफ यहां की उर्वरा भूमि, सुंदर जलवायु तो दूसरी तरफ इसे वीर भूमि होने का भी गौरव प्राप्त है। पंजाब का प्राचीन शुद्ध देशी खान-पान, रहन-सहन, राष्ट्रभक्ति, ईश्वरभक्ति, हंसी-खुशी का व्यवहार और देश, धर्म के प्रति बलिदान की भावना विश्व में प्रसिद्ध है। लेकिन बहते समय के प्रवाह में सब कुछ परिवर्तित होता गया। आज विकास के नाम पर पंजाब विनाश की राह पर लगातार आगे बढ़ रहा है। जिस खेती-किसानी को स्वयं गुरुनानक देव जी ने अपने हाथों से किया और गुरुवाणी में बीजारोपण को शुभकर्म की संज्ञा प्रदान की, इसके पीछे उनकी परोपकार की भावना और कामना थी। उनका संदेश यही था कि खेती करो, बांटकर खाओ और ईश्वर का नाम जपो, ऐसी दिव्य शिक्षा की प्रेरणाओं का इतिहास आज बीते जमाने की बात होकर रह गया। आज के झूठे विकास की रफ्तार की कीमत किसानों को चुकानी पड रही है। यूं तो पिछले पांच दशकों से पंजाब में आर्थिक स्थिति अच्छी रही है, किंतु पैदावारी की बढ़ोतरी के चक्कर में सच्ची हरियाली, खुशहाली बदहाली में बदलती जा रही है, पंजाब की पुरानी किसानी की आदर्श परंपरा आज दम तोडती जा रही है। पैदावारी को बढ़ाने के लिए खेतों में यूरिया, कीटनाशक, कैमिकल दवाईयां इस कदर डाली जा रही हैं कि धरती से उत्पन्न होने वाले सारे खाद्य पदार्थों को विषैला कर दिया है। इसके भयंकर परिणाम पर लुधियाना पंजाब के कृषि विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों का कहना है कि आज पंजाब राज्य के 40 प्रतिशत छोटे किसान या तो समाप्त हो चुके हैं अथवा अपने ही बिके हुए खेतों में मजदूरी करने को मजबूर है।

पंजाब में नए बीज, नई फसलें, अजीबो-गरीब खाद, कीड़े मार दवाएं, भयंकर, किस्म का मशीनीकरण और आंखों में धूल झोंकने वाले प्रचार ने किसानों का भविष्य अंधेरी गुफा में झोंक दिया है। खेतों में रसायनों के प्रयोग और अत्यधिक भूमिगत जल के दोहन के कारण भयंकर बीमारियां फैल रही हैं। ये रोग पटियाला और अमृतसर की ओर ज्यादा फैल रहे हैं। हाल ही में विकलांग बच्चों के जन्म की संख्या बढ़ने लगी है। मालवा क्षेत्र के 149 बीमार बच्चों में से 80 प्रतिशत के बालों में यूरेनियम की अत्यधिक मात्रा पाई गई है। कई लोग इसे अफगानिस्तान में अमेरिका द्वारा यूरेनियम के बमों का प्रभाव बताते हैं। एक अध्ययन के अनुसार पंजाब का 80 प्रतिशत पानी मनुष्यों के पीने लायक नहीं रहा है। 2001-09 के बीच अकेले मुक्तसर जिले में 1074 व्यक्तियों की कैंसर से मृत्यु हुई है और 668 गंभीर अवस्था में हैं। मालवा क्षेत्र में कैंसर अस्पताल नहीं होने से लोग बीकानेर इलाज के लिए जाते हैं। फोरेंसिक लैब पटियाला ने 12 जिलों के खून के सैम्पल लिए जिनमें 6 से 13 प्रतिशत पेस्टिसाइड खून में मिला है। डॉ. अम्बेडकर नेशनल इंस्टीट्यूट जालंधर ने 34 गाँवों के पानी के हैंडपम्पों में यूरेनियम पाया है जिनमें मांसा जिले की स्थिति गंभीर है। भटिंडा जिले में यूरेनियम की सान्द्रता 30 माइक्रोग्राम प्रति लीटर पाई गई जबकि यह 9 से अधिक नहीं होना चाहिए। पंजाब सरकार इन गंभीर क्षेत्रों में 200 आर.ओ. रिवर्स सिस्टम लगा रही है परन्तु वैज्ञानिकों के अनुसार आर.ओ. सिस्टम से हेवीमेटल्स जैसे आर्सेनिक, क्रोमियम, लोहा आदि को दूर नहीं किया जा सकता है। ग्रीनपीस ने भटिंडा, फरीदकोट, मांसा, संगरूर, मुक्तसर और मोगा जिलों में स्थिति गम्भीर पाई गई है। भैंस का दूध भी प्रदूषित हो गया है। 2500 लोगों की मृत्यु के बाद बिसरा की जांच की गई जिसमें डी.डी.टी. ईंधन और इंडोसल्फान रसायन मिले हैं। 10 वर्ष से कम और 10-35 वर्ष के बच्चों में कैंसर पाया गया। वहां के बच्चे बचपन में ही बुढ़े हो रहे हैं। जोड़ों का दर्द, गठिया, और कंकाल फ्लोरोसिस के मरीज बढ़े हैं। त्वचा व फेफड़ों का कैंसर भी बढ़ा है। कुल मिलाकर पंजाब की खेती आज अभिशाप बनती जा रही है।'

पंजाब के अधिकतर गांव आज मरने की कगार पर हैं। सेहत, शिक्षा, आवाजाही और साफ-सफाई की सुविधाएं भी मात्र शहर और कस्बा केंद्रित कर दी गई हैं। लालाच पर केंद्रित किसानी के कारण बेहद समृद्ध लोकजीवन भी छिन्न-भिन्न हो चला है। धान कभी पंजाब की फसल नहीं रही। पर पैसे के लालच और दूसरे राज्यों के लिए अधिक से अधिक चावल बेचने के मोह ने किसानों के फसल चक्र को उल्टा चला दिया। धान का उत्पादन इतना बढ़ा कि सड़ने तक लगा। अधिक उत्पादन के कारण चोरी के नए-नए तरीके ईजाद हुए। सरकारी गोदामों में धान की बोरियां सड़ाने के लिए विशेष तौर पर सब्मर्सिबल पंप लगाए गए। इससे शैलर मालिक और अधिकारियों की तिजोरियां भरती गई, किसान की जेब कटती गई। दूसरे राज्यों से मजदूरों से भरी गाड़ियां आने लगीं। मेहनती माना जाने वाला किसान अब मेहनत से भी दूर होने लगा। शराब का नशा बेशक पहले से था ही, उसमें अब चिट्टे समेत और भी छोटे-बड़े नशे जुड़ गए हैं। ऐसे में, एड्स, दीगर बीमारियां, लूटमार, छीना-झपटी की घटनाएं बढ़ने लगी हैं। लोग नशे के लिए भी कर्ज लेने लगे हैं।

भंयकर उत्पादन और पैसे की पहली खेप से सबसडी, सस्ते कर्ज आदि के कारण सब्मर्सिबलों और ट्रैक्टरों की कम्पनियां सरकारी शरण लेकर हर शहर में बिछ गई। देखते ही देखते 12,644 गांव में 15.5 लाख सब्मर्सिबल लगाए दिए गए। कुछ ही सालों में जल का स्तर 20 से 250 फीट नीचे पहुंच गया। अब इन सब्मर्सिबल पम्पों के लिए 15 से 20 हॉर्स-पावर की मोटर काम करती है। इससे भी बड़ा नुकसान चरागाहों का समाप्त होना है। बांझ पशुओं से दवाओं के सहारे लिए जाने वाले दूध के कारण महिलाओं में भी बांझपन के मामले सामने आने लगे हैं।

प्रेरक प्रसंग

कार्य करने का निराला ढंग

ऋषि दयानन्द महाराज के पश्चात् वैदिक धर्म की वेदी पर सर्वप्रथम अपना बलिदान देने वाले वीर चिरंजीलालजी एक बार कहीं प्रचार करने गये। वहाँ आर्यसमाज की बात सुनने को भी कोई तैयार न था। आर्यसमाज के आरम्भिक काल के इस प्राणवीर ने प्रचार की एक युक्ति निकाली।

गाँव के कुछ बच्चे वहाँ खेल रहे थे। उन्हें आपने कहा - देखो, आप यह मत कहना, ''अहो! चिरंजी मर गया''। बच्चों को जिस बात से रोका जाए वे वही कुछ करते हैं। वे ऊँचा-ऊचा यही शोर मचाने लगे। वीर चिरंजीलाल कहते ऐसा मत कहो। वे और जोर से यही वाक्य कहते। तमाशा-सा था और बच्चे साथ मिल गये। फिर कहा अच्छा मुझे 'नमस्ते' मत कहो। तब नमस्ते का प्रचार भी बलिदान माँगता था। बच्चों ने सारा ग्राम 'नमस्ते' से गुँजा दिया।

थोड़ी देर बालक चुप करते तो चिरंजीलाल अपनी ओजस्वी व मधुर वाणी से अपने गीत गाते। उनका कण्ठ बड़ा मधुर था। वे एक उच्चकोटि के गायक थे। उनकी सुरीली आवाज लोगों को खींच लेती। भजन गाते, भाषण देते। इस प्रकार अपनी सूझ से वीर चिरंजीलालजी ने वहाँ वैदिक धर्म के प्रचार का निराला ढंग निकाला।

स्मरण रहे कि यही चिरंजीलाल आर्यसमाज का पहला योद्धा था जिसको अपनी धार्मिक मान्यताओं के लिए कारावास का कठोर दण्ड भोगना पड़ा। तब मुंशीरामजी (स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज) ने इनका केस बड़े साहस से लड़ा था। ***- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु***

साभार : तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

पृष्ठ 2 का शेष

अब क्रिकेट का भी मजहबवाद...

इसे अपनी आने वाली नस्लों की तरक्की, उनके इल्म-ओ- रोजगार की फिक्र जर्रे बराबर नहीं है। मजहब और दीन से मुल्ला- मौलवियों का रिश्ता वही है जो कच्ची शराब का तस्करों से होता है। इनकी अकीदत मिलावटी होती है और ये नशे के नाम पर जहर बेचते हैं मगर बदनाम शराब होती है। अगर हम मौलानाओं और कादरियों की शान में कसीदें पढ़ सकते हैं, उनकी खुदा परस्ती की मिसालें दे सकते हैं तो फिर इन्हीं आलिम-ओ-कालिम हजरात की दरिंदगी पर कोई बात क्यों न करे, क्यों कोई न लिखे? क्यों मैं उस मौलाना की बात न कहूं जिसके दीन और दाढ़ी में ऐसी कितनी कहानियां दफ्न हैं, जहां मदरसों और इदारों में आने वाले मासूम बच्चे इनकी जिन्सी जियादती का शिकार हुए हैं?

खैर चयनकर्ताओं को जल्दी अकल आ गयी, जो जाफर की बगल में दबा इस्लाम पकड़ा गया। अब टीम की कप्तानी किसी अनुभवी और प्रतिष्ठित खिलाड़ी को दी जानी चाहिए, जो सभी खिलाड़ियों को एकजुट रखकर बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहित कर सके।

- सम्पादक

उत्साह, संकल्प और धूम-धाम से मनाएँ ऋषि पर्व

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव ऋषि पर्व के रूप में मनाएँ - धर्मपाल आर्य

वेद और आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के निमित्त कुछ सुझाव

सरकार द्वारा जारी कोरोना बचाव के दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए ही मनाएं ऋषि पर्व

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी फाल्गुन कृष्ण दशमी 8 मार्च 2021 और फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी 11 मार्च 2021 महर्षि दयानंद सरस्वती जी का जन्मोत्सव तथा बोधोत्सव दोनों पर्व हमारे सामने हैं। ये दोनों पर्व आर्य समाज की समस्त उपलब्धियों के महान प्रेरक पर्व हैं। इनको लेकर विश्व स्तर पर समूचे आर्य जगत में अत्यंत उमंग, उत्साह और उल्लास का वातावरण हैं और क्यों न हो यही तो वे पर्व हैं, अमृत बेलाएं हैं पहला, जब महर्षि का जन्म हुआ और दूसरा जब उन्होंने किशोर अवस्था में महिमा मंडित एक शिवरात्रि को महान जिज्ञासु बनकर मानव समाज के लिए बोधरात्रि सिद्ध कर दिया। धन्य है वह धरा, जहां पर महर्षि ने जन्म लिया। धन्य भागी हैं वे माता-पिता जिन्होंने उन्हें जन्म दिया। बड़भागी हैं वे महानुभाव जिन्होंने उन्हें अपनी आंखों से देखा। वेदों के प्रकाशपुंज महर्षि से प्रेरणा प्राप्त की और धन्य हो गए हम सभी उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज से जुड़कर, उनकी शिक्षाएं प्राप्त कर तथा उनके द्वारा दिखाए हुए वेदमार्ग पर चलकर। महर्षि दयानंद सरस्वती का यह 197वां जन्मोत्सव है और इसके 3 दिन बाद बोधोत्सव है। हर बार ये पर्व वसन्त ऋतु में ही आते हैं। इससे पता चलता है कि महापुरुषों के जन्म पर प्रकृति भी उत्सव मनाती है। चारों तरफ रंग-बिरंगे फूल, स्वच्छ नीला आकाश, हरियाली और खुशहाली का वातावरण मानो कह रहा हो कि अपने जीवन को ऋषिवर के बताए हुए मार्ग पर चलकर ही हम कल्याण की राह पर आगे बढ़ सकते हैं।

महर्षि दयानंद जी के जन्मोत्सव को कैसे मनाएं

यह शीर्षक हमने इसलिए लिखा है क्योंकि इस वर्ष कोरोना काल की वजह से बहुत सी पाबन्दियां अभी भी लागू हैं। आर्य समाजों में अभी भी यज्ञ और सत्संग के कार्यक्रम पूरी तरह से विस्तारपूर्वक आयोजित नहीं किए जा रहे हैं। लेकिन फिर भी हम नियम और व्यवस्थाओं के अनुरूप महर्षि दयानंद सरस्वती के जन्मोत्सव पर विशेष आयोजन अवश्य करे। इसके लिए अपनी-अपनी आर्य समाजों में यज्ञ करें, यज्ञों का आयोजन करें। महर्षि का जीवन दर्शन और उनका अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश वितरित करें। बच्चों को उनके जीवन पर आधारित कॉमिक्स भेंट करें। इस तरह जितना भी हो सकता है। व्यक्ति, परिवार और समाज अपने-अपने स्तर पर प्रयास अवश्य करें।

ओ३म् ध्वज फहराएं

हम सभी आर्यजनों के लिए यह आवश्यक है कि हम अपने घरों पर ओ३म् ध्वज फहराएं। जिनके घरों पर पहले से ओ३म् ध्वज लगा हुआ है वे नया ओ३म्

ध्वज लगाएं। ओ३म् ध्वज आर्य समाज की आन-बान और शान का प्रतीक है। महर्षि के जन्मोत्सव पर, पार्कों में, चौराहों पर, गली में और जहां पर भी उचित स्थान प्रतीत हो वहां सब स्थानों पर ज्यादा से ज्यादा ओ३म् ध्वज फहराएं जिससे जनमानस में नवचेतना का संचार हो और सभी आर्य समाज के ध्वज से परिचित हो जाए।

युवा पीढ़ी को जागृत करें

आर्य समाज देश की युवा पीढ़ी को सुदिशा प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहता है। इस अवसर पर हम अपने बच्चों को महर्षि दयानंद सरस्वती के जीवन से जुड़ी कोई न कोई प्रेरक घटना कहानी के रूप में अवश्य सुनाएं। बच्चे चाहे इसके लिए आनाकानी करें लेकिन प्रेमपूर्वक उन्हें ऋषि की जीवनगाथा अवश्य सुनाएं। इससे भी आगे अपने रिश्ते-नातों में महर्षि के जीवन पर आधारित लघु पुस्तिका जैसे भारत का ऋषि, कॉमिक्स इत्यादि अवश्य भेंट करें। जिससे उन्हें प्रेरणा प्राप्त हो और वे सन्मार्गी बनें।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का उद्घोष स्मरण करें

सारे विश्व को आर्य बनाना यह महर्षि का प्रेरणाप्रद उद्घोष है। इस उद्घोष के अनुरूप मिलकर विचार करें कि हमारे आयास-प्रयास कितने सार्थक हैं, हम कहां से चले थे और अभी कहां तक पहुंचे हैं, हम ऐसा क्या कर सकते हैं कि जिससे वैदिक ज्ञानधारा और आर्य विचारधारा जन-जन का आभूषण बने। इसके लिए मीडिया और सोशल मीडिया के माध्यम से भी प्रचार-प्रसार की योजना बनाएं और उन्हें क्रियान्वित करें। वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों का प्रचार- प्रसार और विस्तार प्रत्येक आर्य का अपना दायित्व है। इसके लिए हम सब आगे आए।

आर्य समाजों और अपने घरों को लाईटिंग से सजाएं

महर्षि दयानंद सरस्वती का जन्म और जीवन प्रेरणा के प्रकाश का महान स्तंभ था। इस अवसर पर हमें अपने घरों को लाईटिंग से सजाना चाहिए। जिससे समाज को पता चले कि आज आर्य समाज के संस्थापक, समाज सुधारक, लोकोपकारी, समाजिक कुरीतियों को जड़ से उखाड़ फेंकने वाले, प्रेम और करुणा की प्रतिमूर्ति महर्षि दयानंद जी का जन्मोत्सव है। उन्होंनें ढ़ोंग, पाखंड और अंधविश्वासों के अंधेरों को वेदों के प्रकाश से दूर भगाया। तो ऐसे महर्षि दयानंद जी के जन्मोत्सव पर प्रतीक रूप में कृत्रिम रोशनी से भी लोग प्रेरणा लें।

परोपकार के कार्य करें

संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है-हम सबके लिए महर्षि का यह संदेश सबसे महत्त्वपूर्ण है। अपने लिए और अपनों के लिए तो सभी जीते हैं लेकिन जो परोपकार के लिए जीयें उसे ही आर्य समाजी कहते हैं। अत: इस अवसर पर महर्षि का चित्र, उनकी लघु जीवनी, वैदिक साहित्य, निर्धन और उपेक्षित लोगों के लिए ऋषि लंगर, अपने आस-पड़ौस में मिठाइयां आदि बांटे। इस बार प्रभात फेरियों और शोभा यात्राओं का आयोजन अगर संभव न हो तो अपने-अपने संपर्क सूत्रों पर ऋषि दयानंद के जन्मोत्सव की बधाई और बोधोत्सव की शुभ कामनाएं अवश्य भेजें। इसके लिए अपने क्षेत्रीय विधायक, पार्षद आदि को भी ऋषि का संदेश भेजें।

इस तरह हम पूरी निष्ठा, लगन और मेहनत से उत्साहपूर्वक महर्षि दयानंद सरस्वती का जन्मोत्सव तथा बोधोत्सव मनाएं और इस अवसर पर कुछ संकल्प भी लें जैसे नित्य प्रति आर्य समाज में जाना, अगर प्रतिदिन न जा सकें तो साप्ताहिक सत्संग में जाना अथवा मासिक तो जाना ही जाना है। कोई न कोई परोपकार का कार्य अवश्य करना। इसके लिए आर्य समाज से संबंधित, संचालित सेवा प्रकल्प से जुड़ना अथवा अपने स्तर पर कोई सेवा कार्य करने का संकल्प लेना। मनुष्य गलतियों का पुतला है। अगर कोई दुर्गुण,

दुर्व्यसन जीवन में लग गया हो तो उसे छोड़ने का संकल्प लेना। ऋषि के मिशन विश्व को आर्य बनाने में सहयोगी बनने का संकल्प लेना। इस तरह से हमारा ऋषि जन्मोत्सव और बोधोत्सव मनाना सार्थक होगा। सभी को महर्षि दयानंद जन्मोत्सव और बोधोत्सव की अग्रिम शुभकामनाएं और बधाई।

– महामन्त्री, दिल्ली. आ. प्र. सभा

165वें जन्मदिवस
(22 फरवरी) पर विशेष

अमर क्रांतिकारी, महान शिक्षाविद् स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज को शत शत नमन

भारत राष्ट्र के महान आर्य संन्यासी स्वामी श्रद्धानंद जी का जन्म पंजाब प्रांत में, जालंधर जिले के तलवन ग्राम में 22 फरवरी 1856 को हुआ। महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रेरणा से प्रेरित होकर आपने अपने तपोबल से देश और धर्म के लिए अनेकानेक मानव सेवा के कीर्तिमान स्थापित किए। वैदिक धर्म संस्कृति और संस्कारों के प्रचार प्रसार एवं आर्ष शिक्षा पद्धति की पुनर्स्थापना हेतु 1902 में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार की स्थापना की। 4 अप्रैल 1916 को जामा मस्जिद के मिम्बर से अपने भाषण का आरंभ वेद मंत्र द्वारा कर एक नया इतिहास रचा। 30 मार्च 1919 को अंग्रेजी हुकूमत द्वारा जन विरोधी रोलेट एक्ट के विरोध में संगीनों के सामने सीना खोलकर अंग्रेजों को ललकारा- चलाओ गोली, स्वामी जी के इस अदम्य साहस और वीरता के सामने अंग्रेजों की संगीने भी झुक गईं थी। अमृतसर में जलियांवाला बाग कांड घटित होने के बाद 1919 में कांग्रेस अधिवेशन के आप स्वागताध्यक्ष बने। आपके द्वारा संचालित दलितोद्धार हेतु शुद्धि अभियान लगातार चलता रहा, भीमराव अंबेडकर आपको गरीबों का मसीहा और महात्मा गांधी सम्मान से बड़ा भाई कहते थे। भारत राष्ट्र को लोक अदालतों का विचार देने वाले भी आप ही थे, पहला राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्र प्रकाशित करने वाले भी आप थे, आपने सांप्रदायिक सद्भाव की मिसाल कायम की, लोक कल्याण के लिए अपनी समस्त संपत्ति दान करने का प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत किया।

पुण्यमय भारत देश और आर्य समाज की आन,बान और शान के प्रतीक स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन के विषय में महात्मा गांधी ने कहा था कि व्यक्तिगत परिवर्तन की अद्भुत मिसाल कायम करते हुए स्वामी श्रद्धानंद ने अपनी सफल वकालत छोड़कर अपना सर्वस्व देश व समाज के लिए अर्पित कर दिया। उन्होंने आजादी के संग्राम में भी भाग लिया व गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। महात्मा गांधी लिखते हैं कि जब पहाड़ से दिखने वाले महात्मा मुंशीराम जी के दर्शन करने और उनका गुरुकुल देखने गया तो मुझे वहां बड़ी शांति मिली। हरिद्वार के कोलाहल और गुरुकुल की शांति के बीच का भेद स्पष्ट दिखाई दिया। महात्मा ने मुझे अपने प्रेम से नहला दिया। ब्रह्मचारी मेरे पास से हटते ही न थे। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी ने भी स्वामी जी के विषय में जो कहा वह अपने आपमें अनुपम प्रेरणा के आधार है। उन्होंने कहा स्वामी श्रद्धानंद जी के आदर्श जीवन में बलिदान की भावनाएं प्रारंभ से व्यक्त हो चुकी थी। उनके द्वारा स्थापित किया गया गुरुकुल देश की सबसे पहले स्थापित की गई शिक्षा संस्थाओं में से वह महान संस्था है जिसे सार्वजनिक सहयोग भली भांति प्राप्त है और देश के विद्यालयों में आज वह एक सफल राष्ट्रीय विद्यालय है। राष्ट्रकवि रवीन्द्रनाथ ट्रेगोर ने स्वामी जी के महान व्यक्तित्व के ऊपर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा था कि स्वामी श्रद्धानंद मृत्यु विजयी थे। सत्य को बहुत लोग जानते हैं लेकिन उसे मानते वे ही मनुष्य हैं जो विशेष शक्तिवान है। सत्य के प्रति निष्ठा रखने का यह आदर्श स्वामी श्रद्धानंद इस दुर्लभ देश को दे गए। इस तरह हजारों लेखकों, चिंतकों और महापुरुषों ने स्वामी श्रद्धानंद के विषय में अपने महान विचार प्रस्तुत किए।

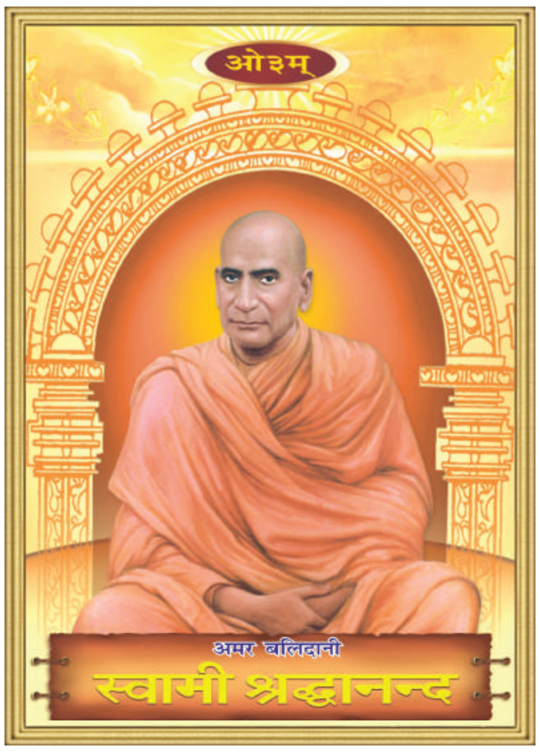

स्वामी जी का जन्मोत्सव हम सभी आर्यजनों का प्रेरणा उत्सव है। उनके द्वारा किए गए सेवा के कार्य युग-युगान्तरों तक, काल-कालन्तरों तक मानव समाज को सुदिशा प्रदान करते रहेंगे। स्वामी जी जब तक जीए देश और धर्म के लिए जीए और बलिदान भी देश और धर्म के लिए ही दिया। ऐसे महापुरुष का जीवन, दर्शन मानव मात्र के लिए प्रेरणा का अनमोल संदेश है। हम सभी आर्यजनों को यह अवश्य समझना चाहिए कि अपने लिए और अपनों के लिए तो सभी जीते हैं। जो देश, धर्म के लिए जीवन जीता है उसी का जीवन सार्थक होता है। स्वामी जी के जन्मोत्सव की समस्त आर्यजनों को बहुत-बहुत बधाई।

- आचार्य अनिल शास्त्री

स्वास्थ्य रक्षा

प्रकृति का स्वास्थ्य सन्देश

प्रकृति और मानवदेह का जन्मजात संबन्ध है। मानव प्रकृति की गोद में जन्म लेता है और उसी के विशाल प्रांगण में क्रीड़ा करते-करते एक दिन परमात्मा की गोद में चला जाता है। प्रकृति का यह विधान अटल है कि जो जीव उसकी उपेक्षा करता है वह उसको दण्डित अवश्य करती है। प्रकृति रूपी अमृत प्रसाद को ग्रहण करने के लिए जीव को सजग एवं सावधान जरूर रहना पड़ेगा। क्योंकि स्वस्थ जीवन अथवा किसी भी प्रकार की पीड़ा के बिना औषध ग्रहण किए प्रसन्नचित, स्वस्थ रहना ही कुशलता है।

गतांक से आगे -

जीवन में जो कुछ भी घटित होता है और विशेषकर जो दु:खद होता है, उसके लिए लोग प्राय: भाग्य को ही कारण मानते हैं। लेकिन सब कुछ दृश्य या अदृश्य ज्ञात अथवा अज्ञात नियमों का परिणाम मात्र है। दु:खद परिणाम इस सच्चाई का संकेत हैं कि हमसे कोई भूल हो गई है, किसी प्राकृतिक नियम का हमने जरूर कहीं-न-कहीं उल्लंघन किया है। जिसके परिणामस्वरूप हमें ऐसा दु:ख प्राप्त हुआ है।

आज के आपा-धापी एवं व्यस्त जीवन में मनुष्यों इन्सान अपनी संस्कृति, सभ्यता और प्रकृति को भूलकर पाश्चात्य विषमताओं को अपनाकर अपने शरीर को रोगी बना रहा है। यह तो अंधकार का अनुकरण मात्र ही कर रहा है। आजकल इंसान उठने-बैठने में, सोने-जागने में, खाने-पीने में, चलने फिरने में, पढ़ने-लिखने में, हंसने और मुस्कराने में भी नाटक ही कर रहा है। इसको न तो शयन की फुरसत है और न जागरण की चिन्ता।

रामायण में एक प्रसंग आता है- भगवान श्रीराम जब वनवास में गए तब भरत अपने ननिहाल में थे। जिस समय भरत वापिस आए तो उन्होंने साकेत (स्वर्ग समान) नगरी में चहुं ओर मातम और मायूसी देखी। असलीयत से अंजान सभी लोगों ने यही समझा कि राम के वन जाने में कहीं न कहीं भरत का भी योगदान है। माता कौशल्या सहित सभी ने भरत को उपालम्भ देना प्रारम्भ किया। व्यथित हृदय भरत ने सभी को बहुत समझाने का प्रयास किया और जब कोई नहीं माना तो उन्होंने वहां पर बहुत विस्तृत भाषण द्वारा मानव मात्र को प्रेरणा प्रदान की थी।

बाल्मीकि रामायण में वर्णन आता है कि भरत श्रेष्ठ ने अपने भ्राता मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के वन जाने की जानकारी से अनजान होने का प्रमाण देते हुए अनेक महावाक्य कहे। उन्होंने कहा-जिसने भी राघव को वन में भेजा हो उसे वह पाप लगे जो सुप्त अवस्था में बैठी हुई गाय को लात मारने वाले को लगता है, विश्वास घात करने वाले को लगता है, छल-कपट करने वाले को लगता है और उन्होंने प्रकृति की उपासना का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए यह भी कहा था-

उभे संध्ये शयानस्य यत पापं परिकल्पयते।
तच्च पापं भवेत तस्ययस्यार्योऽनुमते गत:।।

जिसके कथन से भैय्या श्रीराम को वन में भेजा गया हो, उसे वही पाप लगे जो दोनों संध्याओं के समय अर्थात् सूर्योदय के समय और सूर्यास्त के वक्त सोए हुए पुरुष को प्राप्त होता है।

वस्तुत: यह परमसत्य है कि जो लोग सूर्योदय होने के समय या उसके बाद तक सोते हैं उनको बहुत बड़ा पाप लगता है। इसके विपरीत जो सूर्यास्त के समय सायंकालीन बेला में सोए पड़े होते हैं उनको भी प्रकृति दण्डित करती है। लेकिन आज जैसे देर से सोना और देर से उठना एक फैशन-सा बन गया है।

प्रभात में प्रकृति अमृत लुटाती है। जो लोग उस अमृत बेला में जागृत होते हैं वे अमृतकण प्राप्त करते हैं। उनका जीवन उत्साह, उमंग, उल्लास और खुशियों से परिपूर्ण होता है, आनन्दित होता है। और जो आलस्य में पड़े रहते हैं, सोए रहते हैं उन्हें उदासी, निराशा तथा दु:ख, दारिद्र्य प्राप्त होता है। शतपथ ब्राह्मण का कथन है-

कलि: श्यानो भवति संजिहानस्तु द्वापर:।
उत्तिष्ठंस्त्रेता भवति कृतं सम्पद्यते चरन।।

अर्थात् जब मनुष्य सोया रहता है तो वह उसके जीवन का कलियुग होता है, जंभाई लेने का नाम द्वापर है, उठकर खड़े होने का त्रेता और उठकर चल पड़ने का नाम सतयुग है।

अत: प्रकृति हर जगह शिक्षा दे रही है। एक तरफ ऊंचे पहाड़-शिखर हैं, जो दृढ़ निश्चय के, ऊंचाई के प्रतीक हैं। दूसरी तरफ खाईयां हैं। प्रकृति का यह रूप दर्शाता है कि निराशा की गहरी खाइयों से निकलकर ऊंचे-ऊंचे शिखरों को छूने का सतत् प्रयास करो। जीवन में सद्गुण ग्रहण करने वाले बनो। जहां से भी कोई गुण मिले उसे अपने जीवन में धारण करो। प्रभु से प्रार्थना करते हुए यही कहना कि हे प्रभु! सम्पूर्ण प्रकृति सजी हुई है, मैं भी अपने जीवन के गुलदस्ते को सजाकर रख सकूं मुझे ऐसा आशीर्वाद प्रदान करना।

Continue From Last issue

Makers of the Arya Samaj : Pt. Lekh Ram Ji

..... Lekh Ram was born in 1858 at Syadpur. All were pleased at his birth, but none was happier than his father, Tara Singh. Even as a boy Lekh Ram appeared to be very intelligent. His parents had high hopes about him. When he was five years old he was sent to the village school. There he was taught Urdu and Persian. At that time Urdu and Persian were the languages ofthe court. Lekh Ram's parents were anxious for him to get a Government position. This was but natural, for in those days even a petty Government position was thought to be more important than any other. ....

पं. लेखराम आर्य मुसाफिर
१८५८-१८९७

From this it is clear that Lekh Ram's teacher was not entirely pleased with him. This was but natural, because Lekh Ram was in the habit of expressing his ideas rather fearlessly. He never cared if this offended anybody. Never the less, his teacher had a high regard for him.

This is what he wrote on the occasion ofthe martyrdom of Lekh Ram. "Lekh Ram, as well as his other brothers, read with me. Of these Lekh Ram was the best. He was of medium size, and his complexion was dark. His forehead was broad, and his eyes black. He was very cheerful by disposition. He was a very sincere person. But he was very careless about his dress. He never cared if he had tied his turban properly or not. Nor did he mind ifhis shirt was properly but toned. His memory was wonderful. He would know by heart a thing he had read only once. His knowledge of Persian was remarkable for his age. He could read even the most difficult books in Persian without any trouble. He was, however, very hot-tempered."

At school Lekh Ram wrote verses both in Urdu and Persian. It is said he tried his hand at writing verses in Punjabi also. However, none of these can be found now.

Lekh Ram was sixteen years old when he left the school. His people wanted him to get a position somewhere. At first they asked Munshi Tulsi Das to find him a place as a teacher. But as he did not succeed in doing so they sent Lekh Ram to Peshawar. There with the help of his uncle he got ajob in the Police department. Since he was a fearless person, everybody came to have a great regard for him.

But no one had a greater regard for him than his European super intendent. He liked him very much for he was very straight forward and honest. He is reported to have said one day, "I am' sure Lekh Ram will get into trouble some day on account of his honesty and fearlessness. I would never be surprised ifI heard that he had been killed."

Lekh Ram's life in the Police was not in any way eventful. He got the usual promotion in rank and pay every year. But nothing happened to him beyond this. As time passed, he felt more and more inclined to resign his post. It was probably because he felt the vanity of power and the futil ity of everything belonging to this world.

One result of this was that he refused to marry when his parents asked him. At first they wrote to persuade him to do so. But when this failed, they asked his uncle to see him personally. But Lekh Ram wou ld not listen to him. He said very politely but firmly, "How can you expect me to marry when my heart is set on something different? The affairs of this world have no charm for me. I want to lead a religious life. Marriage and a religious life, you know, do not go well together. Please do not press me to do what I feel to be wrong." His uncle, therefore: gave up the attempt in despair.

The question may be asked, How did Lekh Ram come to think like this?

It has already been said that at an early age he came under theinfluence of a certain Sikh gentleman who taught him to read the Gita. He was somuch influenced by this book that he became a devotee of Shri Krishna.It became a habit with him to repeat the name of Shri Krishna all day long. He also came to have an interest in raslila. He even thought of going to Mathura and Brindaban, the two places sacred to Shri Krishna.

Afterwards he learnt Hindi. Then he got a copy of the Gita in that language. It then became a passion with him to read the Gita. The study of it had a strange effect on him. It filled him with thoughts of renunciation. He wanted to give up the world.

Just at this time he came under the influence of a person called Munshi Kanhiya Lal Alakhdhari. This gentleman wrote a great deal, and his writings had a great effect on the young men of the Punjab and the United Provinces. In his writings he continually asked people to do away with the old superstitions. He was a kind of religious reformer.

After some time this gentle man met Swami Dayanand. He was influenced by him and then accepted him as his Guru. The result was that he became an Arya Samajist. Afterwards he began to explain the teachings of Swami Dayanand in his writings. Whoever read them learnt about the creed oftheArya Samaj.

One of the persons who read his books was Lekh Ram. In this way he became a follower of Swami Dayanand by reading the writings of Munshi Alakhdhari. No sooner did this happen than he began to convert others also to his view. He soon established an Arya Samaj at Peshawar. Meetings were held almost every day at his house.

To be continued......

With thanks By:
"Makers of Arya Samaj"

आर्य सन्देश

क्या आपको डाक प्राप्त करने में कोई असुविधा हो रही है?

क्या आपको आर्य सन्देश नियमित प्राप्त नहीं हो रहा?

क्या आप आर्य सन्देश साप्ताहिक को ऑनलाइन पढ़ना चाहते हैं?

क्या आप आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित करने में सहयोग करना चाहते हैं?

क्या आप देश-विदेश में रहने वाले अपने मित्रों-दोस्तों, रिश्तेदारों को भी आर्य सन्देश पढ़वाना चाहते हैं?

यदि हां! तो

आज ही अपने मोबाइल में टेलिग्राम एप्प डाउनलॉड करें और नीचे दिए लिंक पर क्लिक करके आर्य सन्देश ग्रुप जॉइन करें

https://t.me/aryasandesh110001

- सम्पादक

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे आपको नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन (10 वर्षीय) शुल्क भेजें। कृपया इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। सभी सदस्यों को पत्र द्वारा सूचना भी भेजी जा रही है।

वार्षिक शुल्क 250/- रुपये तथा **आजीवन शुल्क** (मात्र दस वर्षों हेतु) **1000/- रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें।

- सम्पादक

संस्कृत वाक्य प्रबोध

गृहाश्रम एवं भोजन प्रकरणम्

संस्कृत	हिन्दी
77. पुनस्ते का चिकीर्षास्ति ?	फिर तुझको क्या करने की इच्छा है ?
78. गृहाश्रमस्य।	गृहाश्रम की।
79. किं च भोः! पूर्णविद्यस्य जितेन्द्रियस्य परोपकारकरणाय संन्यासाश्रमग्रहणं शास्त्रोक्तमस्ति, तन्न करिष्यसि ?	क्यों जी! जिसको पूर्ण विद्या और जो जितेन्द्रिय है उसको परोपकार करने के संन्यासाश्रम का ग्रहण करना शास्त्रोक्त है, इसको न करोगे ?
80. किं गृहाश्रमे परोपकारो न भवति ?	क्या गृहाश्रम में परोपकार नहीं हो सकता ?
81. यादृशः संन्यासाश्रमिणा कर्तुं शक्यते न तादृशो गृहाश्रमिणाऽनेककार्यैः प्रतिबन्धकत्वेनाऽस्य सर्वत्रा भ्रमणाशक्यत्वात्।	जैसा संन्यासाश्रमी से मनुष्य का उपकार हो सकता है वैसा गृहाश्रमी से नहीं हो सकता क्योंकि अनेक कामों की रुकावट से इसका सर्वत्रा भ्रमण ही नहीं हो सकता।
82. नित्यः स्वाध्यायो जातो भोजन समय आगतो, गन्तव्यम्।	नित्य का पढ़ना-पढ़ाना हो गया, भोजन समय आया, चलना चाहिये।
83. तव पाकशालायां प्रत्यहं भोजनाय किं किं पच्यते ?	तुम्हारी पाकशाला में प्रतिदिन भोजन के लिये क्या-क्या पकाया जाता है ?
84. शाकसूपौदश्वित्कौदनरोटिकादयः।	शाक, दाल, कढ़ी, भात, रोटी आदि।
85. किं वः पायसादिमधुरेषु रुचिर्नास्ति ?	क्या आप लोगों की खीर आदि मीठे भोजन में रुचि नहीं है ?
86. अस्ति खलु, परन्त्वेतानि कदाचित् कदाचिद् भवन्ति।	है सही, परन्तु ये भोजन कभी-कभी होते हैं।
87. कदाचिच्छ कुली-श्रीखण्डादयोऽपि भवन्ति न वा ?	कभी पूरी-कचौड़ी, श्रीखण्ड आदि भी होते हैं वा नहीं ?
88. भवन्ति परन्तु यथर्त्तुयोगम्।	होते हैं परन्तु जैसा ऋतु का योग होता है वैसा ही भोजन बनाते हैं।
89. सत्यमस्माकमपि भोजनादिकमेवमेव नि पद्यते।	ठीक है हमारे भी भोजन आदि ऐसे ही बनते हैं।
90. त्वं भोजनं करि यसि न वा ?	तू भोजन करेगा वा नहीं ?
91. अद्य न करोष्यजीर्णतास्ति।	आज नहीं करता अजीर्णता है।
92. अधिकभोजनस्येदमेव फलम्।	अधिक भोजन का यही फल है।

क्रमशः - साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

गतांक से आगे -

भय से मुकाबला (fight or flight)

- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

5. काल्पनिक भय

कुछ लोग अनहोनी की कल्पना करके भयभीत हो जाते हैं। एक कहानी है-एक यात्री कहीं जा रहा था। गर्मी का मौसम था। यात्री ने विचार किया कि कहीं पीपल या वट वृक्ष मिल जाये तो मैं कुछ समय विश्राम करके फिर आगे चलूंगा। थोड़ी दूर जाने पर उसे सामने एक विशाल वट वृक्ष दिखाई दिया। वह बहुत प्रसन्न हुआ और वहाँ आसन लगा लिया। उसे प्यास लगी हुई थी। उसने चारों ओर देखा तो एक पानी का घड़ा दिखाई दिया। उसने पानी पी लिया और मन में कहने लगा कि यदि कुछ भोजन मिल जाये तो भूख की निवृत्ति हो जाने पर मैं आराम से गन्तव्य स्थान पर पहुंच जाऊंगा। इधर-उधर देखने पर उसे खाने के लिये भी कुछ मिल गया। उससे पहले एक यात्रियों का दल कुछ समय वहां ठहरा था और भोजन करने के पश्चात् बचा हुआ भोजन वहीं छोड़ दिया जिससे अन्य किसी यात्री की तृप्ति हो जाये।

भोजन करने के पश्चात् उसके मन शंका हुई कि मैं जिस वस्तु की कामना करता हूं वह तुरन्त उपलब्ध हो जाती है। निश्चित ही इस वृक्ष पर कोई भूत-प्रेत या जिन्न रहता है। इतना सोचना था कि भय की सिहरन उसके सारे शरीर में दौड़ गयी। और वह वहाँ से भाग चला। घर पर उसे ज्वर ने घेर लिया। वस्तुतः भय उसके मन की कायरता में था।

....अधिकतर भय काल्पनिक होते हैं और कुछ वास्तविक। वास्तविक भय से निपटने के दो उपाय हैं। पहला उपाय उस वातावरण से हट जाना या स्थान बदल लेना। जैसे किसी का घर ग्राम-नगर के अन्तिम छोर पर है जहां लूट मार का भय बना रहता है। उस समय एक उपाय तो यह है कि उस स्थान को बदल कर दूसरे सुरक्षित स्थान में रहा जाये और दूसरा उपाय यह है कि उसका दृढ़ता से मुकाबला किया जायें। जंगल में यात्रा करते हुये अकस्मात् किसी हिंसक प्राणी से भेंट हो जाये तो या तो भाग कर अपनी जान बचायें जिसकी सम्भावना कम है अथवा उसका डट कर मुकाबला करें।......

अधिकतर भय काल्पनिक होते हैं और कुछ वास्तविक। वास्तविक भय से निपटने के दो उपाय हैं। पहला उपाय उस वातावरण से हट जाना या स्थान बदल लेना। जैसे किसी का घर ग्राम-नगर के अन्तिम छोर पर है, जहां लूट मार का भय बना रहता है। उस समय एक उपाय तो यह है कि उस स्थान को बदल कर दूसरे सुरक्षित स्थान में रहा जाये और दूसरा उपाय यह है कि उसका दृढ़ता से मुकाबला किया जाए। जंगल में यात्रा करते हुये अकस्मात् किसी हिंसक प्राणी से भेंट हो जाये तो या तो भाग कर अपनी जान बचायें जिसकी सम्भावना कम है अथवा उसका डट कर मुकाबला करें।

<u>जो अड़े शेर उस नर से डर जाता है</u>
<u>है विदित व्याघ्र को व्याघ्र नहीं खाता है।</u>

इस स्थिति में निम्न उपाय करने चाहियें-

1. अप्रमादात् भयं रक्षेत् - प्रमाद को छोड़ भय से अपनी रक्षा करें। जानबूझकर किसी कार्य को न करना प्रमाद कहलाता है। समझदार व्यक्ति सम्भावित भय या विपत्ति को जान पहले ही सचेत हो जाता हैं। सड़कों पर एक वाक्य लिखा होता है 'सावधानी हटी दुर्घटना घटी'। अकस्मात् कोई भय का अवसर उपस्थित हो जाये उस समय भी विचलित न होते हुये त्वरित निर्णय लेकर उससे निपटना चाहिये।

2. भय से तब तक ही डरना चाहिये जब तक वह सामने नहीं आया है। जब भय का अवसर आ ही जाये तो उस समय बहादुरी से उसका मुकाबला करना चाहिये। एक बार साहस के साथ आगे बढ़कर भय से दो-दो हाथ करने वाले की विजय ही होगी और दूसरे व्यक्ति भी उससे प्रेरणा लेकर भय का मुकाबला करने को सन्नद्ध हो जायेंगे।

3. पहले कारण को जानें -जिन कारणों से भय या विपत्ति आने की सम्भावना हो उन छिद्रों को जानकर उन्हें बन्द करना उचित है। जिन कारणों से भय या संकट आने का खतरा हो उस छिद्र को बन्द करना साहस का काम है। नाव में सामान्य सा छिद्र हो जाये तो धीरे-धीरे नाव में पानी भर जाने से अन्त में वह डूब जायेगी। समझदारी इसी में है कि सर्वप्रथम पानी बाहर उलीचा जाये और फिर उस छिद्र को रोकने का उपाय करना चाहिये।

- शेष अगले अंक में

शोक समाचार

प्राचार्य डॉ. देवदत्त तुंगार जी का निधन

आर्य जगत, हिन्दी व मराठी साहित्य, शिक्षा, समाज सेवा क्षेत्र के महान् क्रांतिवीर, धर्म, शिक्षा और साहित्य के गवेषक व उन्नायक प्राचार्य डॉ. देवदत्त तुंगार का 8 फरवरी 2021को प्रात 4 बजकर 3 मिनिट पर पुणे स्थित निवास पर निधन हो गया। आप आर्य समाज के कर्मठ व निष्ठावान कार्यकर्त्ता थे। वे स्वामी रामानंद तीर्थ विश्व विद्यालय के पत्रिकारिता विभाग के प्रथम अध्यक्ष, रोहा डिग्री कालेज के प्राचार्य, वैदिक गर्जना के संपादकमंडल के वरिष्ठ प्रथम सम्पादक, साहूजी महाराज के जीवनी लेखक, वरिष्ठ पत्रकार, जाति तोड़ो समाज जोड़ो के दूत और मानवीय मूल्यों के प्रसारक थे।

श्रीमती मिट्ठू सचदेवा को पितृशोक

आर्यसमाज जहांगरी पुरी, दिल्ली की सदस्या श्रीमती मिट्ठू सचदेवा जी के पूज्य पिता श्री इन्द्रजीत सचदेवा जी का दिनांक 28 दिसम्बर, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार निगम बोध घाट पर पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न हुआ, परम्पराओं को तोड़ते हुए उनकी सुपुत्री एवं दोहते मा. प्रणय ने मुखाग्नि दी।

श्री देवेन्द्र गुप्ता जी को धर्मपत्नी शोक

आर्यसमाज इन्दिरापुरम् गाजियाबाद(उ.प्र.) के सदस्य श्री देवेन्द्र गुप्ता जी की धर्मपत्नी श्रीमती सुमन लता गुप्ता जी का दिनांक 22 फरवरी, 2021 को हृदयाघात से निधन हो गया है। उनका अंतिम संस्कार 23 फरवरी ब्रजघाट स्थित शमशान घाट पर किया गया। दो दिन पूर्व उनकी पूज्य माता जी का निधन हो गया था, अब बेटी पीछे पीछे चली गयी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

प्रथम पृष्ठ का शेष

196वां महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव उत्साह पूर्वक मनाएं ....

बंधुओ, हर वर्ष की तरह इस वर्ष महर्षि दयानंद सरस्वती जी का जन्मोत्सव दयानंद दशमी (फाल्गुन कृष्ण 10) 8 मार्च, 2021 सोमवार को सुनिश्चित है। अतः आईए हम सब आर्यजन अपने परिवारों में, आर्य समाजों में, आर्य शिक्षण संस्थाओं में एवं अन्य सभी आर्य संस्थाओं तथा व्यापारिक प्रतिष्ठानों में संपूर्ण धरा पर प्रेमसुधा बरसाने वाले ऋषिवर देव दयानंद जी का जन्मदिन पूरे उमंग, उत्साह, उल्लास और खुशियों के साथ मनाएं। इस दिन भारत सरकार की ओर से ऐच्छिक अवकाश घोषित है तथा कुछ राज्यों में राजपत्रित अवकाश भी सुनिश्चित है। लेकिन हम सब आर्यों के लिए यह अवकाश का दिन नहीं है बल्कि हम सबको पूरी शक्ति के साथ महर्षि दयानंद जी के जन्मदिन को मानव सेवा एवं वैदिक धर्म प्रचार दिवस, सप्ताह अथवा पक्ष के रूप में मनाएं महर्षि दयानंद सरस्वती का 197वां जन्म दिवस। इस अवसर पर विशेष रूप से सार्वजनिक स्थानों पर यज्ञ, साहित्य वितरण, भंडारा/ऋषि लंगर, विशाल शोभायात्रा, भजन संध्या/काव्य संध्या इत्यादि कार्यक्रम आयोजित करके जनसाधारण एवं क्षेत्र के प्रतिष्ठित लोगों को आमंत्रित करें। साहित्य वितरण के लिए लघु सत्यार्थ प्रकाश, आर्य समाज के स्वर्णिम सूत्र, एक निमंत्रण, महर्षि दयानंद जीवनी, भारत का ऋषि आदि साहित्य सभा कार्यालय में उपलब्ध है। इसकी प्राप्ति के लिए मोबाइल नं. 9540040339 पर संपर्क करें। - ***महामंत्री***

विश्व का पहला वेद आधारित लाइव टीवी चैनल

ARYA SANDESH TV एप को डाउनलोड करें। एप्प डाउनलोड करने के लिए लिंक पर जाएं -
https://bit.ly/34tP71p

वैदिक धर्म के सन्देश को विश्व में प्रसारित करने के लिए यह सन्देश अधिक से अधिक लोगों को फॉरवर्ड करें एवं एप्प डाउनलोड कराएं।

- व्यवस्थापक

8 साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 22 फरवरी, 2021 से रविवार 28 फरवरी, 2021

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 25-26/02/2021 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 24 फरवरी, 2021

प्रतिष्ठा में,

पुलवामा में आतंकी हमले में शहीद हुए 40 जवानों की द्वितीय पुण्यतिथि के अवसर पर

मंडावली में आर्यसमाज दिल्ली की ओर से 40 कुण्डीय यज्ञीय श्रद्धांजलि

आज से दो साल पहले 14 फरवरी 2019 दोपहर करीब 3 बजे जम्मू-कश्मीर में एक ऐसा आतंकवादी हमला हुआ था, जिससे पूरा देश दहल उठा। इस आत्मघाती हमले में 40 जवान शहीद हुए। देश भर में विभिन्न सरकारी-गैर सरकारी स्तरों पर इन जवानों की द्वितीय पुण्य तिथि पर जहां अनेक कार्यक्रमों के आयोजन किए गए वहीं पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मंडल एवं शहीद भगत सिंह शाखा के सहयोग से हवन उत्थान जन कल्याण समिति द्वारा मंडावली क्षेत्र में एक शाम पुलवामा के उन शहीदों के नाम श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए 40 कुंडीय यज्ञ किया, जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में आचार्य यशपाल शास्त्री, यज्ञ ब्रह्मा श्री सत्यप्रिय शास्त्री जी थे। मुख्य यजमान के रूप में स्थानीय निगम पार्षद श्रीमती शशि चांदना व भाजपा मंडल अध्यक्ष श्री कैलाश यादव एवं आर्य समाज सूरजमल विहार के मंत्री श्री सुभाष ढींगरा उपस्थित रहे।

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

SHRI MAHARSHI DAYANAND SARASWATI SMARAK TRUST TANKARA

tankaratrust@gmail.com | www.tankara.com | Mob. 9427001119

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

अत्यावश्यक सूचना

ऋषिबोधोत्सव

इस वर्ष 10-11 मार्च 2021 को होनेवाले ऋषिबोधोत्व के विषय में
ऋषिभक्तों की सेवा में निवेदन है कि
कोरोना महामारी के कारण इस वर्ष सरकार तथा स्थानीय प्रशासन द्वारा
ऋषिबोधोत्सव की स्वीकृति प्राप्त नहीं हुई है और
न ही मिलने की संभावना है।
इस कारण कार्यक्रम बड़े स्तर पर नहीं होगा।
मात्र 200 (दोसौ) स्थानीय ऋषिभक्तों की सम्मिलत कर बोधोत्सव होगा।
लेकिन उत्सव का प्रसारण आर्यसन्देश यूट्यूब चैनल पर होगा।
सामान्यतः 5 से त्6 हज़ार ऋषिभक्त बोधोत्सव पर सम्मिलित होते हैं
उन सब श्रद्धालु ऋषिभक्तों को नम्र प्रार्थना है कि
इस वर्ष टंकारा न आकर अपने घर पर ही
सुरक्षित रहकर बोधोत्व का आनन्द लें।
समय एवं अन्य जानकारी आपको
आर्यसन्देश यूट्यूब चैनल तथा फेसबुक पर मिलती रहेगी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे
प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
https://amzn.to/3i3rKI7
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

जानिये एम डी एच देगी मिर्च की
शुद्धता, गुणवत्ता और उत्तमता की
सच्चाई
यह मिर्च कर्नाटक में पैदा होती हैं। वहां पर लगभग 1000 औरतें पूरा दिन सिर्फ मिर्च की डंडी उतारने के काम में लगी रहती हैं। उसी मिर्च से देगी मिर्च तैयार होती है।

क्या आप लकड़ी (डंडी) मिला मिर्च मसाला खाना चाहते हैं या बिना लकड़ी (डंडी) वाला मिर्च मसाला ?
लकड़ी (डंडी) बिना मिर्च मसाला शुद्धता और स्वाद के गुणों से भरपूर होता है। मसाला लगता भी कम है और स्वाद भी भरपूर आता है। क्योंकि बिना लकड़ी (डंडी) के मिर्च की शुद्धता 20% से भी ज्यादा और बढ़ जाती है। जबकि लकड़ी (डंडी) मिला मिर्च मसाला लगता भी ज्यादा है और स्वाद भी नहीं आता है और तो और यह सेहत के लिये भी नुकसान दायक होता है।
आप खुद ही फैसला कीजिये कि आप कैसा मिर्च मसाला खाना पसंद करेंगे क्योंकि सवाल सिर्फ शुद्धता और स्वाद का ही नहीं आप की सेहत का भी है।
MDH मसाले सेहत के रखवाले असली मसाले सच-सच

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली -110015 फोन नं० 011-41425106-07-08
E-mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com
ESTD. 1919

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह